उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी

DVS-101

वास्तु शास्त्र का परिचय व स्वरूप

मानविकी विद्याशाखा

ज्योतिष विभाग

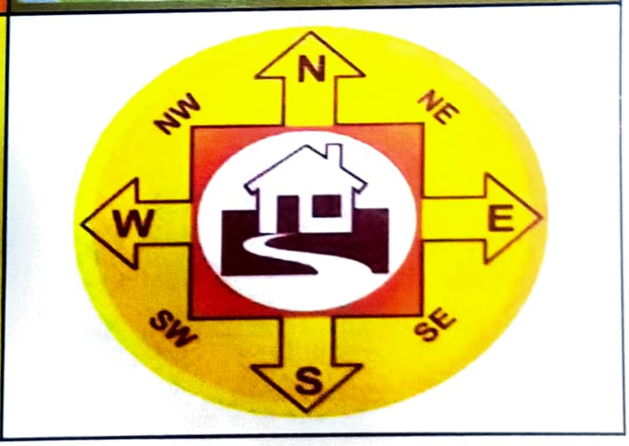

अध्ययन बोर्ड (फरवरी-2020)

अध्यक्ष
कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी

प्रोफेसर देवीप्रसाद त्रिपाठी
अध्यक्ष, वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री
राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।

प्रोफेसर एच.पी. शुक्ल - (संयोजक)
निदेशक, मानविकी विद्याशाखा
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

प्रोफेसर विनय कुमार पाण्डेय
ज्योतिष विभागाध्यक्ष, सं0वि0ध0वि संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।

प्रोफेसर रामराज उपाध्याय
अध्यक्ष, पौरोहित्य विभाग, LBS, नई दिल्ली

इकाई लेखन सम्पादन एवं संयोजन

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

इकाई लेखन	खण्ड	इकाई संख्या
डॉ. देशबन्धु असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वास्तुशास्त्र विभाग लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली।	1	1,2,3,4,5
डॉ. अशोक थपलियाल सह-आचार्य, वास्तुशास्त्र विभाग लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली	2	1,2,3,4
डॉ. रत्न लाल शर्मा असिस्टेन्ट प्रोफेसर, ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार	3	1,2,3,4,5,6,7

कापीराइट @ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

प्रकाशन वर्ष - 2021 **प्रकाशक** - उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।
मुद्रक: - सहारनपुर इलेक्ट्रिक प्रेस, बोमन जी रोड, सहारनुपर **ISBN NO. - 978-93-90845-68-2**

नोट : - (इस पुस्तक के समस्त इकाईयों के लेखन तथा कॉपीराइट संबंधी किसी भी मामले के लिये संबंधित इकाई लेखक जिम्मेदार होगा । किसी भी विवाद का निस्तारण नैनीताल स्थित उच्च न्यायालय अथवा हल्द्वानी सत्रीय न्यायालय में किया जायेगा।)

प्रतियाँ : 25

वास्तुशास्त्र का परिचय व स्वरूप **DVS-101**

अनुक्रम

प्रथम खण्ड – वास्तु शास्त्र का परिचय	**पृष्ठ - 1**
इकाई 1: वास्तु शास्त्र का परिचय	2 -15
इकाई 2: वास्तु शास्त्र का उद्भव एवं विकास	16-33
इकाई 3: वास्तुशास्त्र के प्रवर्त्तक एवं आचार्य	34-59
इकाई 4: वास्तुशास्त्र का प्रयोजन	60-72
इकाई 5 : वास्तुशास्त्र में पंचमहाभूत स्वरूप	73-92
द्वितीय खण्ड – वास्तुशास्त्र का विभिन्न स्वरूप	**पृष्ठ- 93**
इकाई 1: वास्तुशास्त्र एवं प्राकृतिक शक्तियाँ	94-112
इकाई 2: दिक् साधन एवं स्वरूप	113-131
इकाई 3: देश एवं काल विवेचन	132-153
इकाई 4: वर्तमान में वास्तुशास्त्र का स्वरूप	154-183
तृतीय खण्ड – वास्तुशास्त्र में भूमि एवं भूखण्ड	**पृष्ठ- 184**
इकाई 1: भूमि एवं भूखण्ड चयन	185-203
इकाई 2: भूमि के प्रकार	204-216
इकाई 3: भूखण्ड का विस्तार एवं कटाव	217-237
इकाई 4: भूमि के आकार एवं ढलान विचार	238-254
इकाई 5 : वीथि विचार	255-270
इकाई 6: प्रशस्त एवं निषिद्ध भूमि लक्षण	271-286
इकाई 7: भूशयन विचार	287-301

इकाई -1 वास्तुशास्त्र का परिचय

इकाई की संरचना

1.1. प्रस्तावना
1.2. उद्देश्य
1.3. ज्ञान के मूल स्रोत - वेद
    1.3.1. भारतीय संस्कृति में मानव और प्रकृति
1.4. वास्तुशास्त्र – सामान्य परिचय
    1.4.1. वास्तुशास्त्र की परिभाषा
1.5. सारांश
1.6. पारिभाषिक शब्दावली
1.7. अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.8. संदर्भ ग्रंथ सूची
1.9. सहायक पाठ्य सामग्री
1.10. निबन्धात्मक प्रश्न

इकाई - 2 वास्तुशास्त्र का उद्भव एवं विकास

इकाई की संरचना

2.1. प्रस्तावना

2.2. उद्देश्य

2.3. ज्ञान-विज्ञान के मूल : वेद

2.3.1. वेदों में वास्तु का उद्भव और विकास

2.4. षड्वेदाङ्ग : सामान्य परिचय

2.4.1. वेदाङ्गों में वास्तु का उद्भव और विकास

2.5. सारांश

2.6. पारिभाषिक शब्दावली

2.7. अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.8. संदर्भ ग्रंथ सूची

2.9. सहायक पाठ्य सामग्री

2.10. निबन्धात्मक प्रश्न

इकाई - 3 वास्तुशास्त्र के प्रवर्तक एवं आचार्य

इकाई की संरचना

3.1. प्रस्तावना

3.2. उद्देश्य

3.3. वास्तुशास्त्र के प्रवर्त्तक

3.3.1. वास्तुशास्त्र की आचार्यपरम्परा

3.4. वास्तुशास्त्र के पूर्ववर्ती आचार्य

3.4.1. वास्तुशास्त्र के परवर्ती आचार्य

3.5. सारांश

3.6. पारिभाषिक शब्दावली

3.7. अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.8. संदर्भ ग्रंथ सूची

3.9. सहायक पाठ्य सामग्री

3.10. निबन्धात्मक प्रश्न

इकाई - 4 वास्तुशास्त्र का प्रयोजन

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 भारतीय संस्कृति और शास्त्रपरम्परा
4.3.1 भारतीय शास्त्रपरम्परा का प्रयोजन
4.4 शास्त्र के लक्षणों की कसौटी पर वास्तुशास्त्र
4.4.1 वास्तुशास्त्र का प्रयोजन एवं उपयोगिता
4.5 सारांश
4.6 पारिभाषिक शब्दावली
4.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.8 संदर्भ ग्रंथ सूची
4.9 सहायक पाठ्य सामग्री
4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

इकाई - 5 वास्तुशास्त्र में पञ्चमहाभूत स्वरूप

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 भारतीय वास्तुशास्त्र में अदृष्टतत्त्व
5.3.1 पञ्चमहाभूतों का परिचय
5.4 पञ्चमहाभूतों का ग्रहों से सम्बन्ध
5.4.1. पञ्चमहाभूतों का स्वरूप तथा महत्त्व
5.5 सारांश
5.6 पारिभाषिक शब्दावली
5.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.8 संदर्भ ग्रंथ सूची
5.9 सहायक पाठ्य सामग्री
5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

MJY-004

कुण्डली निर्माण

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर देवी प्रसाद त्रिपाठी
कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तराखण्ड

प्रोफेसर विनय कुमार पाण्डेय
अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रोफेसर भारत भूषण मिश्र
ज्योतिष विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
के.जे.सोमैय्या परिसर, मुम्बई

प्रोफेसर श्याम देव मिश्र
ज्योतिष विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
जयपुर परिसर, राजस्थान

प्रोफेसर मालती माथुर,
निदेशक, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू

कार्यक्रम समन्वयक (Prograame Coordinator)
डॉ0 देवेश कुमार मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू

कार्यक्रम समन्वयक (Programme Coordinator)

डॉ0 देवेश कुमार मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू

पाठ्यक्रम सम्पादक

प्रोफेसर देवी प्रसाद त्रिपाठी
कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तराखण्ड

पाठ्यक्रम लेखक

लेखक	खण्ड	इकाई
डॉ0 देशबन्धु वास्तुशास्त्र विभाग, लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, कटवरिया सराय, नई दिल्ली	एक	01 से 05
डॉ0 जितेन्द्र कुमार दुबे सहायक आचार्य ज्योतिष श्रीमतीलाडदेवी शर्मा पंचोली आदर्श संस्कृत महाविद्यालय बरून्दनी भीलवाड़ा राजस्थान	दो	01 से 05
डॉ0 जितेन्द्र कुमार दुबे सहायक आचार्य ज्योतिष श्रीमती लाडदेवी शर्मा पंचोली आदर्श संस्कृत महाविद्यालय बरून्दनी भीलवाड़ा राजस्थान	तीन	01 से 05
डॉ0 रत्न लाल शर्मा अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार	चार	01 से 05

आवरण

श्री तमाल बासु

प्रिंट प्रोडक्शन

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव,
सा.नि. एवं वि.प्र. इग्नू, नई दिल्ली

जनवरी, 2022

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2022

ISBN : 978-93-5568-092-1

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

मानविकी विद्यापीठ एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

लेज़र टाइप सेट– टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर्स, C-206, A.F. Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रण – राज प्रिंटर्स, ए–9, सैक्टर बी–2, ट्रॉनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद (यू.पी.)

विषयानुक्रम

खण्ड 1.	तात्कालिक ग्रह निर्माण	7
इकाई 1.	सूर्योदय, सूर्यास्त एवं दिनमान साधन	9
इकाई 2.	इष्टकाल एवं चालन	27
इकाई 3.	भयात्, भभोग एवं चन्द्रस्पष्टीकरण	43
इकाई 4.	पञ्चाङ्ग द्वारा सूर्यादि ग्रहों का तात्कालिक स्पष्टीकरण	59
खण्ड 2.	भावसाधन	79
इकाई 1.	पलभा, चरखण्ड, उदयमान	81
इकाई 2.	लग्नसाधन	92
इकाई 3.	दशमलग्न साधन	104
इकाई 4.	भावसाधन एवं चलितचक्र निर्माण	116
इकाई 5.	अष्टकवर्ग साधन	129
खण्ड 3.	दशा विवेचन	149
इकाई 1.	विंशोत्तरी दशा साधन	151
इकाई 2.	अष्टोत्तरी दशा साधन	167
इकाई 3.	योगिनी दशा साधन	182
इकाई 4.	अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा	195
इकाई 5.	सूक्ष्म दशा एवं प्राणदशा	212
खण्ड 4.	बलाबल निर्धारक प्रमुख अवयव	233
इकाई 1.	षड्वर्ग विचार	235
इकाई 2.	दृष्टि विचार	249
इकाई 3.	राशि एवं ग्रह का स्वरूप	270
इकाई 4.	नक्षत्र, राशि एवं ग्रहों का पारस्परिक सम्बन्ध	283
इकाई 5.	षड्बल विचार	295
इकाई 6.	ग्रहमैत्री विमर्श	305

इकाई 1 सूर्योदय, सूर्यास्त एवं दिनमान साधन

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 अक्षांश, रेखांश एवं देशान्तर

1.2.1 क्रान्ति एवं चर ज्ञान

1.3 मध्यमान्तर, वेलान्तर एवं स्पष्टान्तर

1.3.1 सूर्योदय, सूर्यास्त एवं दिनमान का साधन

1.4 सारांश

1.5 पारिभाषिक शब्दावली

1.6 बोध प्रश्न

1.7 उपयोगी पुस्तकें

1.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप

- अक्षांश, रेखांश एवं देशान्तर से परिचित होंगे।
- क्रान्ति तथा चर ज्ञान से परिचित होंगे।
- वेलान्तर तथा स्पष्टान्तर को जान सकेंगे।
- सूर्योदय तथा सूर्यास्त साधन विधि को जान सकेंगे।
- दिनमान एवं रात्रिमान से परिचित होंगे।

1.1 प्रस्तावना

यस्योदये जगदिदं प्रतिबोधमेति मध्यस्थिते प्रसरति प्रकृतिक्रियासु
अस्तङ्गते स्वपिति चोच्छावसितैकमात्रं भावत्रये स जयति प्रकटप्रभावः।।

भुवनभास्कर सूर्य ही इस संसार का हेतु है। जिसके उदय होते ही संसार के समस्त लोग निद्रा को त्यागकर जागृत हो जाते हैं। जैसे–जैसे सूर्य आकाश में ऊपर की ओर अग्रसर होता है, वैसे–वैसे समस्त लोग अपनी–अपनी क्रियाओं में रत हो जाते है तथा जैसे ही सूर्य अस्त होता है, समस्त प्राणी भी शनैः शनैः सो चले जाते है। इस प्रकार से तीनों कालों पर सूर्य का ही प्रत्यक्ष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। कालबोधक शास्त्र ज्योतिष में इसी कारण से सूर्य का अत्यधिक महत्त्व है। वस्तुतः संसार की चेतना का मूल आधार सूर्य ही है। वेदों में भी कहा गया है–

"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुशश्च"

अर्थात् सूर्य ही संसार की आत्मा है। आधुनिक काल में प्रचलित यान्त्रिक घड़ियों में काल की गणना का आरम्भ रात्रि 12 बजे से होता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र में काल की गणना का आरम्भ सूर्योदय के साथ ही होता है। ज्योतिषशास्त्र में काल की गणना घण्टा–मिनट के स्थान पर घटी पल में की जाती है। एक अहोरात्र में जिस प्रकार 24 घण्टे होते हैं, उसी प्रकार से ज्योतिषीय परंपरा में 60 घटी का

इकाई 2 इष्टकाल एवं चालन

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 इष्टकाल साधन

2.3 चालन साधन

2.4 सारांश

2.5 शब्दावली

2.6 बोध प्रश्न

2.7 उपयोगी पुस्तकें

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपके निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति होगी।

- इष्टकाल का अर्थ जान सकेंगे।
- इष्टकाल के महत्व को समझ सकेंगे।
- इष्टकाल की साधन विधि को समझ सकेंगे।
- पङ्क्ति का अर्थ जान सकेंगे।
- पङ्क्ति के इष्टकाल साधन विधि को समझ सकेंगे।
- चालन साधन विधि को समझ सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

इष्टकाल ज्योतिष शास्त्र का अतीव महत्त्वपूर्ण विषय है। वस्तुतः जन्मपत्रिका का गणित इसी इष्टकाल को ही आधार बनाकर किया जाता है। ज्योतिष शास्त्र कालबोधक शास्त्र है। काल गणना ही जन्मपत्रिका के गणित का मूल है। इष्टकाल शुद्ध होने पर ही शुद्ध कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। इष्ट का अर्थ है–अभीष्ट अर्थात् वह समय जो हमें इष्ट अर्थात् अभीष्ट हो, उसे ही इष्टकाल कहते हैं। इष्टकाल के उपरान्त कुण्डली निर्माण हेतु ग्रहों का स्पष्टीकरण किया जाता है, ग्रहों के स्पष्टीकरण हेतु चालन साधन किया जाता है। चालन फल के संस्कार के उपरान्त ही जातक के इष्टकालिक ग्रह हमें प्राप्त हो जाते हैं। इस इकाई में इष्टकाल और चालन साधन का वर्णन किया जाएगा।

2.2 इष्टकाल साधन

जन्म कुण्डली किसी निश्चित समय पर आकाश का मानचित्र होता है। जातक के जन्म–समय पर पूर्व क्षितिज में जिस राशि का उदय हो रहा हो, वही उसका जन्म लग्न माना जाता है। शुद्ध जन्म लग्न का ज्ञान तभी सम्भव है, यदि जातक का जन्मेष्टकाल भी शुद्ध हो। जन्मेष्टकाल के आधार पर ही जन्मकालिक लग्न और जन्मकालिक ग्रह स्पष्ट का गणित किया जाता है। आपको ज्ञात ही है कि लोकव्यवहार जिन घड़ियों के माध्यम से चलता है, उन घड़ियों का समय घण्टा और मिनट में होता है, यद्यपि ज्योतिष में घण्टा, मिनट और सैकेण्ड के स्थान पर घटी, पल और विपल का प्रयोग किया

इकाई 3 भयात, भभोग एवं चन्द्रस्पष्टीकरण

इकाई संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 भयात–भभोग साधन

3.3 चन्द्रस्पष्टीकरण

3.4 सारांश

3.5 शब्दावली

3.6 बोध प्रश्न

3.7 उपयोगी पुस्तकें

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति होगी–

- जन्म नक्षत्र एवं गतनक्षत्र का बोध कर सकेंगे।
- भयात–भभोग का लक्षण जान सकेंगे।
- भयात–भभोग की साधन विधि से परिचित होंगे।
- चन्द्रस्पष्टीकरण विधि को ज्ञान कर सकेंगे।

चन्द्रगति की साधन विधि से परिचित हो सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में भयात, भभोग एवं चन्द्रस्पष्टीकरण का प्रतिपादन किया जाएगा। ज्योतिषशास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों में चन्द्रस्पष्टीकरण हेतु भयात–भभोग साधन की एक विशिष्ट विधि प्राप्त होती है। प्राचीन काल में पञ्चाङ्गों में साप्ताहिक ग्रहस्पष्ट दिये जाते थे। अतः उसके आधार पर चालन विधि से सभी ग्रह जन्मकालिक स्पष्ट किये जाते थे। चन्द्र् की गति ग्रहों में सर्वाधिक है, यह इतनी अधिक है कि चन्द्र की स्थिति में एक दिन में ही अत्यधिक परिवर्तन होता रहता है। अतः साप्ताहिक ग्रहस्पष्ट होने पर चन्द्र के स्पष्टीकरण में अत्यन्त स्थूलता की सम्भावना रहती है, यद्यपि आधुनिक काल में, जब पञ्चाङ्गों में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं तो चालन विधि से भी चन्द्रस्पष्टीकरण किया जा सकता है, परन्तु भयात, भभोग साधन के माध्यम से चन्द्रस्पष्टीकरण की प्रक्रिया प्राचीन और प्रामाणिक मानी जाती है। चन्द्रस्पष्टीकरण की इस विधि का आधार जातक का नक्षत्र होता है।

3.2 भयात–भभोग साधन

भयात–भभोग साधन हेतु सर्वप्रथम हमें जातक के जन्मनक्षत्र और गतनक्षत्र का परिज्ञान होना चाहिए। जातक का जन्म जिस नक्षत्र में होता है, वह जन्मनक्षत्र तथा उससे ठीक पिछला नक्षत्र गतनक्षत्र कहलाता है। पञ्चाङ्ग में जो घट्यात्मक नक्षत्र दिये रहते हैं वे चन्द्रमा के नक्षत्र होते हैं और चन्द्रमा उस नक्षत्र में जितने घटी–पल तक रहता है, उसी को दर्शाते हैं। जातक के गतनक्षत्र और जन्मनक्षत्र का परिज्ञान आप अधोलिखित उदाहरण से और सरलता से समझ सकेंगे।

इकाई 4 पंञ्चांग द्वारा सूर्यादि ग्रहों का तात्कालिक स्पष्टीकरण

4.0 प्रस्तावना
4.1 उद्देश्य
4.2 ग्रह–गति साधन
4.2.1 वक्री ग्रह का गति साधन
4.4 ग्रहस्पष्टीकरण प्रक्रिया
4.4.1 वक्री ग्रह का स्पष्टीकरण
4.5 सारांश
4.6 शब्दावली
4.7 बोध प्रश्न
4.8 उपयोगी पुस्तकें

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- ग्रहों की गति क्या है? इसका ज्ञान कर सकेंगे।
- ग्रहों की गति साधन विधि को समझ सकेंगे।
- ग्रहस्पष्ट के महत्व को समझ सकेंगे।
- ग्रहस्पष्टीकरण में चालन फल संस्कार से अवगत हो सकेंगे।
- ग्रहस्पष्टीकरण विधि को समझ सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई ग्रहों के स्पष्टीकरण की दृष्टि से अतीव महत्वपूर्ण है। ज्योतिष शास्त्र में सूर्यादि ग्रहों की गति–स्थित्यादि के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है। सभी ग्रह अपने–अपने विमण्डलों (कक्षाओं) में संचार करते हैं परन्तु उन ग्रहों का मापन क्रान्ति वृत्त में किया जाता है क्योंकि क्रांति वृत्त को राशियों में बांटा गया है। कुल द्वादश(12) राशियां है। एक राशि में 30° अंश होते हैं। इसी प्रकार से 27 नक्षत्र है तथा एक नक्षत्र का मान 3°20′ अंश/कला है। नक्षत्र को भी 4 चरणों में विभक्त किया गया है। कोई ग्रह किसी राशि के कितने अंश–कला–विकला पर संचार कर रहा है, यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि अंशों में भिन्नता होने पर ग्रह के शुभाशुभ फल में भी विविधता आ जाती है। ग्रहों के जन्मकालिक स्पष्ट राशि–अंश–कला–विकला के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र में वर्णित ग्रह स्पष्टीकरण विधि का प्रयोग किया जाता है, जिसका प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत इकाई में किया जाएगा।

4.2 ग्रह–गति साधन

ग्रहस्पष्टीकरण जन्मकुण्डली में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि ग्रह प्रतिक्षण संचरणशील होते हैं। सभी ग्रह अपनी–अपनी कक्षा में ही संचार करते हैं। जिन ग्रहों की कक्षा छोटी है, उन ग्रहों को अपने कक्षीय भ्रमण मे कम समय लगता है तथा जिन ग्रहों की कक्षा बड़ी है उन ग्रहों को अपने कक्षीय भ्रमण में अधिक समय लगता है, सबसे छोटी कक्षा चन्द्रमा की है अतः चन्द्रमा को कक्षीय भ्रमण में सबसे कम समय लगता है, यद्यपि शनि की कक्षा सर्वाधिक बड़ी (दीर्घ) होने के कारण शनि को अपने

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

MJY-008
फल-विचार

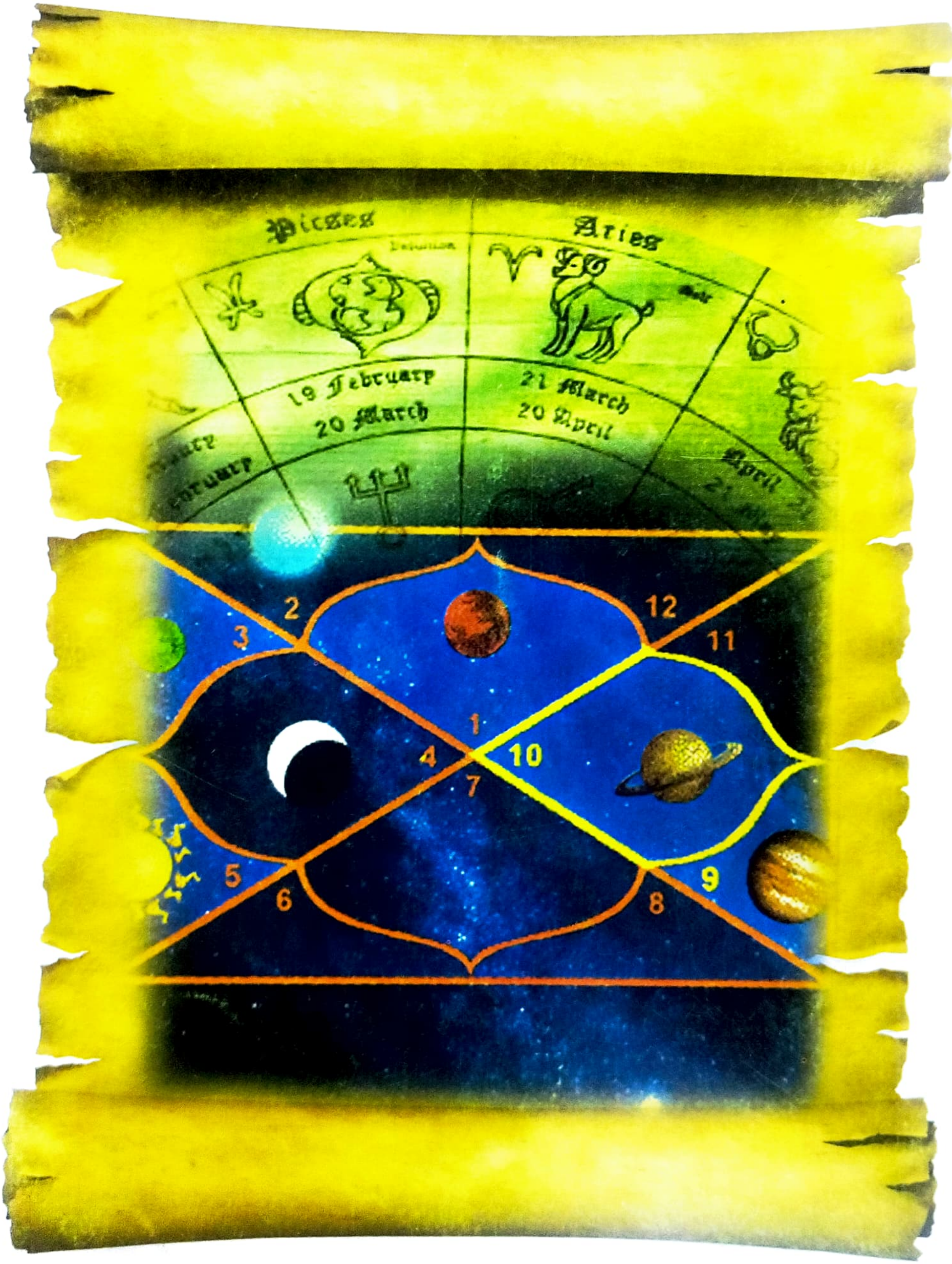

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर देवी प्रसाद त्रिपाठी कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तराखण्ड	प्रोफेसर मालती माथुर निदेशक, मानविकी विद्यापीठ इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, इग्नू, नई दिल्ली
प्रोफेसर विनय कुमार पाण्डेय अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	प्रोफेसर भारत भूषण मिश्र ज्योतिष विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के.जे. सोमैय्या परिसर, मुम्बई
प्रोफेसर श्यामदेव मिश्र ज्योतिष विभाग,केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर, राजस्थान	**कार्यक्रम समन्वयक (Programme Coordinat** डॉ. देवेश कुमार मिश्र, एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, इग्नू, नई दिल्ली
पाठ्यक्रम समन्वयक (Course Coordinator) डॉ.देवेश कुमार मिश्र,एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत, मानविकी विद्यापीठ इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई.दिल्ली	**मुख्य सम्पादक** डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, ज्योतिर्विद एवं राष्ट्रीय महासचिव अखिलभारतीय विद्वतपरिषद, काशी-वाराणसी। पूर्व सेवा:- पंचांग विभाग काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी **सह सम्पादक** डॉ.देवेश कुमार मिश्र एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत, मानविकी विद्यापीठ इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम लेखक

लेखक	खण्ड	इकाई
डॉ जितेन्द्र कुमार दुबे, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, लाड देवी शर्मा पंचोली आदर्श संस्कृत महाविद्यालय राजस्थान	1	01 से 04
डॉ. देशबन्धु शर्मा, ज्योतिष विभाग,लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, कटवारिया सराय, नई दिल्ली	2	01 से 03
डॉ. योगेन्द्र शर्मा, ज्योतिष विभाग,लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, कटवारिया सराय, नई दिल्ली	3	01से 06
प्रोफेसर श्यामदेव मिश्र, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर, राजस्थान, वर्तमान :- जम्मू परिसर	4	01 से 07

कार्यालयीय सहयोग: जानकी भट्ट, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव, इग्नू, नई दिल्ली

फरवरी, 2023

इंदिरा गाधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2023

ISBN: 978-93-5568-735-7

सर्वाधिकार सुरक्षित. इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गाधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। मानविकी विद्यापीठ एवं इंदिरा गाधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गाधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर C-206, A.F. Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक : चन्द्र प्रेस 469 पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एस्टेट, दिल्ली 110092

विषय-सूची

खण्ड 1	**भावगत राशिफल विवेचन**	**5**
इकाई 1	भावपरिचय एवं विचारणीय विषय	7
इकाई 2	द्वादश-भावगत मेषादि चार राशियों का फल	27
इकाई 3	द्वादश-भावगत सिंहादि चार राशियों का फल	46
इकाई 4	द्वादश-भावगत धनु आदि चार राशियों का फल	78
खण्ड 2	**भावगत ग्रहफल विवेचन**	**111**
इकाई 1	द्वादश-भावगत सूर्य और चन्द्रमा का फल	113
इकाई 2	द्वादश-भावगत मंगल, बुध, गुरु एवं शुक्र ग्रहों का फल	132
इकाई 3	द्वादश-भावगत शनि, राहु एवं केतु ग्रहों का फल	152
खण्ड 3	**भावफल विचार - भाग 1**	**165**
इकाई 1	तनु-भावगत विषयों का विचार	167
इकाई 2	धन-भावगत विषयों का विचार	185
इकाई 3	सुहृद्-भावगत विषयों का विचार	198
इकाई 4	भूमि, भवन, वाहन एवं मातृसुखादि भावों का विचार	211
इकाई 5	विद्या, बुद्धि एवं सन्तति विचार	224
इकाई 6	शत्रु एवं रोग विचार	239
खण्ड 4	**भावफल विचार - भाग 2**	**253**
इकाई 1	दाम्पत्यसुख विचार	255
इकाई 2	आयुविचार	270
इकाई 3	नवमभावगत विषयों का विचार	282
इकाई 4	वृत्ति-विवेचन	297
इकाई 5	आयभावगत विषयों का विचार	309
इकाई 6	व्ययभावगत विषयों का विचार	321
इकाई 7	पुरुषार्थचतुष्टय एवं कर्मफल	334

इकाई 1 द्वादश भावगत सूर्य और चन्द्रमा ग्रहों का फल

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 सूर्य का स्वरूप एवं परिचय
1.2.1 प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं चतुर्थ भावों में सूर्य का फल
1.2.2 पंचम,षष्ठ,सप्तम एवं अष्टम भावों में सूर्य का फल
1.2.3 नवम,दशम,एकादश एवं द्वादश भावों में सूर्य का फल
1.3 चन्द्रमा का स्वरूप एवं परिचय
1.3.1 प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं चतुर्थ भावों में चन्द्र का फल
1.3.2 पञ्चम,षष्ठ,सप्तम एवं अष्टम भावों में चन्द्र का फल
1.3.3 नवम,दशम,एकादश एवं द्वादश भावों में चन्द्र का फल
1.4 सारांश
1.5 शब्दावली
1.6 सन्दर्भ ग्रन्थ
1.7 बोध प्रश्न

1.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप-

- सूर्य तथा चन्द्र के स्वरूप से परिचित होगें।
- द्वादश भावों में सूर्य के फल से परिचित होगें।
- द्वादश भावों में चन्द्र के फल से परिचित होगें।
- द्वादश भावों में सूर्य का फल कथन करने में समर्थ होगें।
- द्वादश भावों में चन्द्र का फल कथन करने में समर्थ होगें।

1.1 प्रस्तावना

जैसा कि आपने इस पाठ्यक्रम के विविध खण्डों के अध्ययन के उपरान्त यह भली- भांति जान लिया है कि ज्योतिषशास्त्राङ्गभूत होरा स्कन्ध के माध्यम से आप किसी भी जातक को उसके जीवन के विविध कालखण्डों में प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल का कथन करने में समर्थ हो सकते है, जिसके लिए प्रमुख साधन (टूल) भाव, राशि और ग्रह हैं। इन साधनों के आधार पर ही आप किसी जातक को प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल का विवेचन करने में सक्षम हो सकते

इकाई 2 द्वादशभावगत मंगल,बुध,गुरु और शुक्र फल

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 मंगल का स्वरूप एवं परिचय

2.2.1 प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं चतुर्थ भावों में मंगल का फल

2.2.2 पंचम,षष्ठ,सप्तम् एवं अष्टम् भावों में मंगल का फल

2.2.3 नवम,दशम,एकादश एवं द्वादश भावों में मंगल का फल

2.3 बुध का स्वरूप एवं परिचय

2.3.1 प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं चतुर्थ भावों में बुध का फल

2.3.2 पञ्चम,षष्ठ,सप्तम एवं अष्टम् भावों में बुध का फल

2.3.3 नवम,दशम,एकादश एवं द्वादश भावों में बुध का फल

2.4 बृहस्पति का स्वरूप एवं परिचय

2.4.1 प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं चतुर्थ भावों में बृहस्पति का फल

2.4.2 पञ्चम,षष्ठ,सप्तम एवं अष्टम् भावों में बृहस्पति का फल

2.4.3 नवम,दशम,एकादंश एवं द्वादश भावों में बृहस्पति का फल

2.5 शुक्र का स्वरूप एवं परिचय

2.5.1 प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं चतुर्थ भावों में शुक्र का फल

2.5.2 पञ्चम,षष्ठ,सप्तम एवं अष्टम् भावों में शुक्र का फल

2.5.3 नवम,दशम,एकादश एवं द्वादश भावों में शुक्र का फल

2.6 सारांश

2.7 शब्दावली

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

2.9 बोध प्रश्न

2.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप-

- मंगल, बुध,गुरु तथा शुक्र के स्वरूप से परिचित होगें।
- द्वादश भावों में मंगल,बुध,गुरु तथा शुक्र के फल से परिचित होगें।
- द्वादश भावों में मंगल का फल कथन करने में समर्थ होगें।
- द्वादश भावों में बुध का फल कथन करने में समर्थ होगें।

इकाई 3 द्वादशभावगत शनि, राहु और केतु ग्रहों का फल

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 शनि का स्वरूप एवं परिचय

- 3.2.1 प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं चतुर्थ भावों में शनि का फल
- 3.2.2 पंचम,षष्ठ,सप्तम एवं अष्टम भावों में शनि का फल
- 3.2.3 नवम,दशम,एकादश एवं द्वादश भावों में शनि का फल

3.3 राहु का स्वरूप एवं परिचय

- 3.3.1 प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं चतुर्थ भावों में राहु का फल
- 3.3.2 पञ्चम,षष्ठ,सप्तम एवं अष्टम् भावों में राहु का फल
- 3.3.3 नवम,दशम,एकादश एवं द्वादश भावों में राहु का फल

3.4 केतु का स्वरूप एवं परिचय

- 3.4.1 प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं चतुर्थ भावों में केतु का फल
- 3.4.2 पञ्चम,षष्ठ,सप्तम एवं अष्टम् भावों में केतु का फल
- 3.4.3 नवम,दशम,एकादश एवं द्वादश भावों में केतु का फल

3.5 सारांश

3.6 शब्दावली

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

3.8 बोध प्रश्न

3.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप-

- शनि, राहु तथा केतु के स्वरूप से परिचित होगें।
- द्वादश भावों में शनि,राहु तथा केतु के फल से परिचित होगें।
- द्वादश भावों में शनि का फल कथन करने में समर्थ होगें।
- द्वादश भावों में राहु का फल कथन करने में समर्थ होगें।
- द्वादश भावों में केतु का फल कथन करने में समर्थ होगें।

MPDD/IGNOU/P.O./2K/FEBRUARY, 2023

ISBN : 978-93-5568-735-7

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

CBKG-002
कालगणना की विधियाँ

खण्ड 1 **भारतीय कालमान-1**	**7**
खण्ड 2 **भारतीय कालमान-2**	**81**

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. रविप्रकाश आर्य
आचार्य, महर्षि दयानन्द पीठ,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय,
रोहतक

प्रो. हंसधर झा
आचार्य, ज्योतिष विभाग,
भोपाल परिसर, राष्ट्रीय संस्कृत
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. अशोक थपलियाल
सह आचार्य, वास्तुशास्त्र विभाग,
श्री लालबहादुर राष्ट्रीय संस्कृत
विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्री रवि शंकर
निदेशक, सभ्यता अध्ययन केन्द्र,
नई दिल्ली

प्रो. मालती माथुर
निदेशक, मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदानगढ़ी, नई दिल्ली

डॉ. सोनिया
सहायक आचार्य, संस्कृत,
एवं पाठ्यक्रम संयोजक,मानविकी
विद्यापीठ, इग्नू मैदानगढ़ी, दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

इकाई लेखक	सम्पादन
डॉ. प्रवेश व्यास (इकाई-1,4,5,6,7,8) सहायक आचार्य, वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय	**श्री रविशंकर** निदेशक, सभ्यता अध्ययन केन्द्र **भाषा-सम्पादन** **डॉ. सोनिया,** सहायक आचार्य, संस्कृत, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू
डॉ. देश बन्धु (इकाई-3) सहायक आचार्य,वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय	
श्री रविशंकर(इकाई- 2,9) निदेशक, सभ्यता अध्ययन केन्द्र	
डॉ. गोविन्द वल्लभ (इकाई – 10,11,12,13,14) सहायक आचार्य,ज्योतिष विभाग, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल	

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव, सा. नि. एवं वि. प्र., इग्नू, नई दिल्ली

जनवरी, 2023

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2023

ISBN: 978-93-5568-734-0

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मकुत विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्ततु करने की अनुमति नहीं है। मानविकी विद्यापीठ एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बार `में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की आरे से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कंप्यटूर, C-206, A.F.Enclave-II,नई दिल्ली

मुद्रक : चन्दु प्रेस, 469, पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एस्टेट, दिल्ली–110092

पाठ्यक्रम परिचय

CBKG – 002 **"कालगणना की विधियां"**4 क्रेडिट के इस पाठ्यक्रम में कालगणना की भारतीय विधियों के बारे में पढ़ेंगे।

पिछले पाठ्यक्रम में हमने काल के दर्शन को पढ़ा था। इन इकाइयों के अध्ययन से हम जान सकेंगे कि ये विधियां और इसकी इकाइयां पूरी तरह वैज्ञानिक हैं। चाहे वह निमिष, त्रुटि, पल, घटी और मुहुर्त आदि की सूक्ष्म गणना हो या फिर युगों, मन्वन्तरों, कल्पों आदि की विशाल इकाइयां हों, ये सभी इकाइयां पूरी तरह तार्किक और प्रत्यक्ष अवलोकनों पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए त्रसरेणु की इकाई है। यह सूर्य के प्रकाश में दिखने वाले सूक्ष्मतम कणों को प्रकाश द्वारा पार किये जाने की अवधि को त्रसरेणु कहा गया है। विचारणीय यह भी है कि त्रसरेणु का काल प्राचीन काल में भारतीय मनीषियों ने कैसे निकाला होगा?

निश्चित ही उस काल में भी ऐसे यंत्र रहे होंगे, जिससे ये गणनाएं की गई होंगी। उस काल के यंत्रों और वेधशालाओं की एक झलक भी इस पाठ्यक्रम में दी गई है। भारतीय मनीषियों ने कालगणना के माध्यम से न केवल सृष्टि के विज्ञान को सरलता से समझाया है, बल्कि उन्होंने इससे एक सुखी तथा संतुष्ट भारतीय समाज की रचना भी की। वास्तव में विज्ञान और समाजशास्त्र का अंतस्संबंध कालगणना के विषय से बहुत ही स्पष्टता से स्थापित होता है।

विज्ञान जहाँ प्रकृति के रहस्यों को जानने और समझने का नाम है, वहीं उसके आधार पर सुखी मानव जीवन का निर्माण करना उसका अंतिम उद्देश्य है। यदि यह नहीं है तो होना चाहिए। इस पाठ्यक्रम की सभी इकाइयां कालगणना की इकाइयों को स्पष्ट करने के साथ-साथ उसके विज्ञान और दर्शन को भी स्पष्ट कर रही हैं। हमारा विश्वास है कि इस पाठ्क्रम के अध्ययन से छात्र न केवल पंचांग की वैज्ञानिकता को समझ पाएंगे, बल्कि इसकी दुरूहता भी समाप्त हो सकेगी और साथ ही वे काल के भारतीय दर्शन को समझ कर अपने जीवन को भी अच्छा और सुखी बना सकेंगे, जो कि ज्ञान की हर शाखा का अंतिम उद्देश्य है।इकाइयों की रचना इस प्रकार की गई है, ताकि तारतम्यता बनी रहे और आप अध्ययन करने वालों की रुचि बनी रहे। विज्ञान और दर्शन का विषय होने के कारण भाषा को सरलतम रखने का प्रयास किया गया है, फिर भी पारिभाषिक शब्दों को यथावत् ही दिया गया है।

कुल मिला कर अपेक्षा है कि छात्रों को दो खण्डों तथा 14 इकाइयों में विभाजित इस पाठ्यक्रम से पढ़ने में सरलता भी रहे और रोचकता भी बनी रहे। साथ में छात्रों को भरपूर जानकारियां भी मिल जाएं। आशा करते हैं कि छात्रों को बिना किसी कठिनाई के यह गूढ़तम विषय स्पष्ट हो सकेगा। अध्येता पूरे उत्साह के साथ आगे अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित होंगे। इकाई के अन्त में उपयोगी पुस्तकों की सूची भी दी गई है, जिससे आप इन पुस्तकों का अध्ययन कर सम्बन्धित विषय में अधिक ज्ञान की प्राप्ति कर सकेंगे। हमें ऐसी आशा है कि हमारे अध्यताओं के लिए यह प्रस्तुत पाठ्यक्रम रुचिकर व ज्ञानवर्धक होगा।

शुभकामनाओं के साथ

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की पाठ्यसामग्री निम्न प्रकार से प्रस्तुत की गई है –

पाठ्यक्रम 2. कालगणना की विधियाँ

खंड एक : भारतीय कालमान - 1

इकाई 1. भारतीय कालमान का वैशिष्ट्य

इकाई 2. भारतीय कालमान की सूक्ष्म एवं स्थूल इकाईयाँ

इकाई 3. मुहूर्त, तिथि, करण एवं योग

इकाई 4. दिनमान तथा सप्ताहमान

इकाई 5. पक्ष और ग्रहण

इकाई 6. ऋतु

इकाई 7. मास विमर्श (चतुर्विध मास, अधिमास, क्षय मास)

इकाई 8. अयन तथा वर्ष (सम्वत्सर)

खंड दो : भारतीय कालमान - 2

इकाई 9. युगमान -1 (5,12 तथा 60 वर्षीय युग)

इकाई 10. युगमान -2 (चतुर्युग और महायुग)

इकाई 11. मन्वन्तर

इकाई 12. कल्प एवं कल्पों का वैज्ञानिक विवरण

इकाई 13. ब्राह्म वर्ष, विष्णु वर्ष, शिव वर्ष, दैवीवर्ष

इकाई 14. भारतीय कालगणना की वेधशालाएं

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय सूची

खंड एक : भारतीय कालमान-1		**7**
इकाई 1	भारतीय कालमान का वैशिष्ट्य	9
इकाई 2	भारतीय कालमान की सूक्ष्म एवं स्थूल इकाईयाँ	18
इकाई 3	मुहूर्त, तिथि, करण एवं योग	24
इकाई 4	दिनमान तथा सप्ताहमान	35
इकाई 5	पक्ष और ग्रहण	45
इकाई 6	ऋतु	55
इकाई 7	मास विमर्श (चतुर्विध मास, अधिमास, क्षय मास)	63
इकाई 8	अयन तथा वर्ष (सम्वत्सर)	72
खंड दो	**भारतीय कालमान-2**	**81**
इकाई 9	युगमान -1 (5,12 तथा 60 वर्षीय युग)	83
इकाई 10	युगमान -2 (चतुर्युग और महायुग)	91
इकाई 11	मन्वन्तर	98
इकाई 12	कल्प एवं कल्पों का वैज्ञानिक विवरण	105
इकाई 13	ब्राह्म वर्ष, विष्णु वर्ष, शिव वर्ष, दैवीवर्ष	113
इकाई 14	भारतीय कालगणना की वेधशालाएं	120

वेद एवं विश्वशांति

संपादक

डॉ. राजा लुइस अल्वारेज

डॉ. देवी प्रसाद त्रिपाठी

वेद एवं विश्वशान्ति

सम्पादक

डॉ. राजा लुइस अल्वारेज

एवं

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

प्रकाशक

KRD PUBLICATION

PUBLICATION

के.बी.डी. पब्लिकेशन
नई दिल्ली-110002
संस्करण : 2024
ISBN- 978-81-960260-2-8

© सम्पादक

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। सम्पादक/लेखक की लि
अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिको
सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञा
संग्रहण एवं पुनः प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्
अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

वेद एवं विश्व शान्ति

सम्पादकः राजा लुइस अल्वारेज एवं प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

प्रकाशक

के.बी.डी. पब्लिकेशन

4262/3, प्रथम मंजिल, अंसारी रोड़,
दरियागंज, दिल्ली- 110002
फोनः 011-43580581, 09810611914
Email: kbd.publication@gmail.com

अनुक्रमणिका

समर्पण -04

आशीर्वाद- सद्गुरु श्री मधूसूदन साई -07

आशीर्वाद- ब्रह्मचारी वशिष्ठ -12

पुरोवाक् - डॉ. राजा लुइस अल्वारेज -15

सम्पादकीय- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी -25

वैदिक ज्ञान से प्रेरित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
-डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' -33

वैदिक साहित्य में गणित की अवधारणा
- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी -38

वेद से विश्व शान्ति और समृद्धि
-डॉ. राजेश नैथानी -63

वेदों में मानवीय मूल्य
- प्रो. गिरिजा शंकर शास्त्री -73

वेदों में शल्य चिकित्सा
- प्रो. गोपालप्रसाद शर्मा -81

आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी में वैदिक ज्ञान की प्रासंगिकता
- प्रो. किशोर चंद्र पाढ़ी -89

वेदों में पर्यावरणी चिन्तन
- प्रो. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी -98

वेदों में सामाजिक समरसता
-प्रो. सुन्दरनारायण झा -136

वैदिक वाङ्मय में स्थापत्य
- प्रो. अशोक थपलियाल -151

10. वेदों में पर्यावरणीय अभिचेतना
- डॉ. मोहिनी अरोरा
11. स्थिरता के अनन्त रास्ते : शाश्वत भारतीय ज्ञान और सतत विकास लक्ष्य
- डॉ. प्रतिभा
12. वेदकालीन शिल्पी
- डॉ.देशबन्धु
13. वेदों में गणितशास्त्र
- डॉ. प्रवेशव्यास
14. वैदिक वाङ्मय में ऋतुओं की अवधारणा
- डॉ. योगेन्द्र कुमार शर्मा
15. वैदिक वास्तु विमर्श
- डॉ. दीपक वशिष्ठ
16. वैदिक पर्यावरणीय चिन्तन
- डॉ. नवीन पाण्डेय
17. वैदिक मनोविज्ञान का एक अध्ययन
- डॉ. सूर्यमणि भण्डारी
18. वैदिक विज्ञानः ब्रह्माण्ड के रहस्यों का अनावरण
- डॉ. अव्यक्त रैना

वेदकालीन शिल्पी

-डॉ.देशबन्धु
सहायकाचार्य,वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

वेद ही विश्व की प्राचीनतम उपलब्ध ज्ञानराशि है। भारतीय ज्ञान परम्परा में वेदों को ही समस्त प्रकार की विद्याओं का मूल माना जाता है। वेदों में अध्यात्म के साथ-साथ विविध भौतिक विद्याओं के बीज भी निहित है। कालान्तर में बीज रूप में निहित इन्हीं विद्याओं का विकसित स्वरूप हमें विविध शास्त्रों के रूप में दृष्टिगोचर होता है। कालान्तर में विकसित इन कलाओं में से शिल्प कला भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वेदों में शिल्पियों की एक विस्तृत परम्परा प्राप्त होती है। जिसका उल्लेख प्रस्तुत शोधपत्र में किया जा रहा है। वैदिक काल का शिल्पी केवल शिल्पी ही नहीं अपितु एक योगी तथा साधक भी था। वह इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त समस्त सौदर्य का साक्षात्कार करने में सक्षम था तथा उस सौदर्य की अनुभूति कर आनन्दित होता था। उस अनुभूत आनन्द को वह शिल्प कला के रूप में व्यक्त करता था। वस्तुत: शिल्पी का प्रमुख कार्य सृजन करना है और यह सृजन एक दैवीय गुण है। वस्तुत: जितने भी देवता है, वे सभी शिल्पी भी है तथा जितने भी शिल्पी हैं, वे सभी देवता की कोटि में भी परिगणित हैं। अग्नि, सोम, मित्र, वरुण, सूर्यादि समस्त कवि है और कवि का अर्थ है सृजनकर्ता। ऋग्वेद[1] के अनुसार प्रत्येक देव का अपना कार्यक्षेत्र है। ऋग्वेद[2] में देवों की संख्या मूल रूप से 6 है परन्तु अपने विस्तार को पाते हुए तैतीस तथा अन्तत: 3,339 तक यह संख्या व्याप्त हैं।[3] ये सभी देवता अपने-अपने कार्य की विशिष्टता के कारण उच्च, मध्यम और तृतीय श्रेणी में परिगणित हैं। सृजनकर्ताओं में प्रमुख तथा समस्त शिल्पियों के पृज्य देवता विश्वकर्मा प्रजापति के पद पर प्रतिष्ठित हैं ।

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BSKS-191
भारतीय वास्तुकला प्रणाली

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

प्रो. आनन्द कुमार श्रीवास्तव
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी
सह आचार्य, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. सत्यकाम, निदेशक,
मानविकी विद्यापीठ
इग्नू मैदानगढ़ी, नई दिल्ली

प्रो. रमाकान्त पाण्डेय
निदेशक, मुक्त स्वाध्याय पीठ,
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

डॉ. देवेश कुमार मिश्र
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक	
डॉ. प्रवेश व्यास सहायक आचार्य, वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	इकाई 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9
डॉ. अशोक थपलियाल सह आचार्य, वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	इकाई 10, 11, 12, 13
डॉ. देशबन्धु सहायक आचार्य, वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	इकाई 14, 15, 16, 17

पाठ्यक्रम सम्पादक

डॉ. रीता गुप्ता
सहायक आचार्य, संस्कृत संकाय, मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. रीता गुप्ता
सहायक आचार्य,
संस्कृत संकाय, मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

कार्यक्रम संयोजक

डॉ. आशीष कुमार
सहायक आचार्य,
संस्कृत संकाय, मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव, इग्नू, नई दिल्ली

मई, 2024

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2024

ISBN- 978-93-6106-848-5

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

मानविकी विद्यापीठ एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कंप्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली
मुद्रक : सरस्वती ऑफसेट प्रिन्टर्स प्रा0 लि0, सरस्वती हाउस, ए–5, नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस –2, नई दिल्ली–110028